जैव विकास में मददगार धार्मिक रीति रिवाज़

धार्मिक मान्यताएं चाहे जैव विकास के सिद्धांत को स्वीकार न करती हों मगर धार्मित रीति रिवाज़ जाने-अनजाने जैव विकास की प्रक्रियाओं में हाथ बंटाते हैं। ओक्लाहामा स्टेट विश्वविद्यालय के मिचि टोबलर और उनके साथियों द्वारा किया गया अध्ययन यही कहता है।

दक्षिणी मेक्सिको के ज़ोकू समुदाय में एक परंपरा है - ये लोग हर साल वहां की एक गंधक गुफा कुएवा डेल एज़ुफ्रे में इकट्ठे होते हैं। साथ में बार्बेस्को नाम के एक पौधे की जड़ों की चटनी लेकर आते हैं। बार्बेस्को पौधे की यह चटनी अत्यंत कारगर निश्चेतक होती है। परंपरा के मुताबिक इसकी मदद से ज़ोकू लोग उस गुफा में पाई जाने वाली मछलियों को बेहोश करते हैं। ऐसा माना जाता है कि ऐसा करने से अगले साल अच्छी बारिश होगी।

टोबलर व उनके साथियों के अध्ययन से पता चला है कि इस प्राचीन रिवाज़ ने जैव विकास की प्रक्रिया को प्रभावित किया है। वैसे तो टोबलर की टीम गुफा में पाई जाने वाली मोली मछलियों का अध्ययन लंबे समय से करती रही है। इन मछलियों की एक विशेषता यह है कि ये अंडे नहीं, बच्चे देती हैं। उपरोक्त परंपरा के मद्दे नज़र टोबलर के दल ने इन मछलियों पर बार्बेस्को विष का असर जांचने की ठानी।

उन्होंने कुछ मछलियां उस जगह से इकट्ठी कीं जहां हर साल विष डाला जाता है और कुछ मछलियां उसके थोड़े ऊपर के एक स्थान से लीं जहां यह विष नहीं पहुंच पाता। दोनों मछली समूहों को अलग-अलग टंकियों में रखा गया। दोनों में बार्बेस्को विष डाला गया। टीम के सदस्य तब हैरत में पड़ गए जब देखा कि इन दो समूहों पर विष के असर में अंतर था। गंधक गुफा की मछलियों ने उस विष को ज़्यादा देर तक सहन किया जबकि अन्य मछलियां तुरंत बेहोश हो गईं।

इस प्रयोग से लगता है कि साल-दर-साल चले उस रिवाज़ ने उस मछली समूह को विष को झेलने की ताकत प्रदान की है जिसे हर साल इसे झेलना होता है। टीम का मत है कि हर साल विष डालने पर वे मछलियां बचती होंगी जो विष को सहन कर पाएं। इस तरह से गंधक गुफा में धीरे-धीरे ऐसी मछलियों की तादाद बढ़ती गई।

अध्ययन दर्शाता है कि लंबे समय तक चली इस चयन प्रक्रिया का परिणाम यह हुआ है कि वहां रहने वाली मछलियां ज़ोकू संस्कृति के प्रति अनुकूलित हो गई हैं। ज़ाहिर है कि मनुष्य के क्रियाकलापों व संस्कृति का असर जीवों की विकास प्रक्रिया पर पड़े बिना नहीं रहता। ***(स्रोत फीचर्स)***